अगस्त २०१२

कीमत रु १२/-

दादा भगवान परिवार का

अक्रम एक्सप्रेस

सिन्सियरिटी

अक्रम एक्सप्रेस

संपादकीय

बालमित्रों,

दुनिया में जितने भी महान पुरुष हो गए, उन सभी में सिन्सियरिटी एक महत्वपूर्ण गुण था। उन्होंने किसी काम को कम या ज्यादा महत्व नहीं दिया और ना ही उसे छोटा या बड़ा काम समझा। बस, सिन्सियरिटी से जो काम हाथ में लिया, वही करते रहे और लक्ष्य को पकड़े रखा और अंत में सफलता प्राप्त की।

अगर सफलता की एक चाबी सिन्सियरिटी ही है, तो आप भी इस चाबी का उपयोग क्यों न करें?

परम पूज्य दादाश्री ने भी इस गुण की बहुत तारीफ की है। यह गुण हम में मैं कैसे आए, उसकी सुंदर समझ भी दी है।

तो आइए हम भी अपने में सिन्सियरिटी के गुण विकसित करके जीवन व्यवहार और मोक्ष की सफलता के लिए आगे बढ़ें।

- डिम्पल मेहता

अनुक्रमणिका

दादाजी कहते हैं... १
यह तो नई ही बात ! ३
सिन्सियरिटी से सफलता ४
जागे तभी सवेरा ७
चलो खेलें १०
ऐतिहासिक गौरव गाथाएँ १२
अपने आपका परीक्षण करके देखो १४
मीठी यादें १६
पूज्यश्री के साथ बच्चे १७

संपादक :
डिम्पल महेता
वर्ष : १ अंक : ३
अखंड क्रमांक :३
अगस्त २०१२

संपर्क सूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००
अहमदाबाद : (०७९) २७५४०४०८, २७५४३९७९

राजकोट त्रिमंदिर : ९२४१११३९३
वडोदरा : (०२६५) २४१४१४२
मुंबई : ९३२३५२८९०१-०३
यु.एस.ए. : ७८५-२७१-०८६९
यु.के. : ०७९५६४७६२५३
Website: kids.dadabhagwan

Printed, Published and Owned by :
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Published at Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Printing Press:-
Amba Offset
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

वार्षिक सदस्यता(हिन्दी)
भारत :१२५ रुपये
यु.एस.ए. :१५ डॉलर
यु.के. :१० पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : ५५० रुपये
यु.एस.ए. : ६० डॉलर
यु.के. : ४० पाउन्ड
D.D/ M.O'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम पर भेजें।

दादाजी कहते हैं...

प्रश्नकर्ता : सिन्सियरिटी यानी क्या? उसे किस तरह लाएँ?

दादाश्री : सिन्सियरिटी मतलब ध्येय को पकड़कर रखना, पोल मारे बिना। आपको ध्येय के प्रति निरंतर सिन्सियर रहना चाहिए। चाहे संयोग कैसे भी आएँ, फिर भी जिसका निश्चय नहीं डगमगाता है, जो निश्चय के प्रति ही सिन्सियर रहता है, उसे दिक्कत नहीं आती। अंदर तो बहुत सारे धूर्त हैं (लालच, मोह, वगैरह) कि जो सिन्सियर नहीं रहने देते, लेकिन यदि सिन्सियर रहे, तो उसे फिर ऐसी कोई भी चीज़ बाधक नहीं होगी। उदाहरण के तौर पर जैसे चींटी मुँह में अनाज का दाना लेकर उसके बिल में दीवार पर चढ़ कर जाती है, तब कितनी बार गिरती है फिर भी सिन्सियरली बार-बार प्रयत्न करती ही रहती है और शाम होने तक बहुत से दाने अपने बिल में पहुँचाने में सफल हो ही जाती है।

प्रश्नकर्ता : मतलब जिसका निश्चय पक्का होगा, वह सिन्सियर रहेगा ही?

दादाश्री : निश्चय पक्का हो, तो ही रह सकता है न? नहीं तो जिसका निश्चय ही नहीं है, फिर उसे क्या है? नदी को जिस तरफ बहना हो, वह उसी तरफ बढ़ती है, किनारा तो कहीं दूर रह जाता है! नदी अपनी तरफ खींचेगी और आपको किनारे पर रहने का ज़ोर लगाना चाहिए। उदाहरण के तौर पर जैसे परीक्षा नज़दीक हो और घर में सब पिक्चर देख रहे हों और आप भी पिक्चर देखने बैठ जाएँ और खराब रिज़ल्ट आए, तब समझ में नहीं आ जाएगा कि कोई निश्चय ही नहीं था! लेकिन परीक्षा में अच्छे मार्क्स लाने ही हैं, यदि ऐसा निश्चय पक्का हो, तो अपना मन पिक्चर देखने के लिए नहीं ललचाएगा और पढ़ने में एकाग्रता रहेगी।

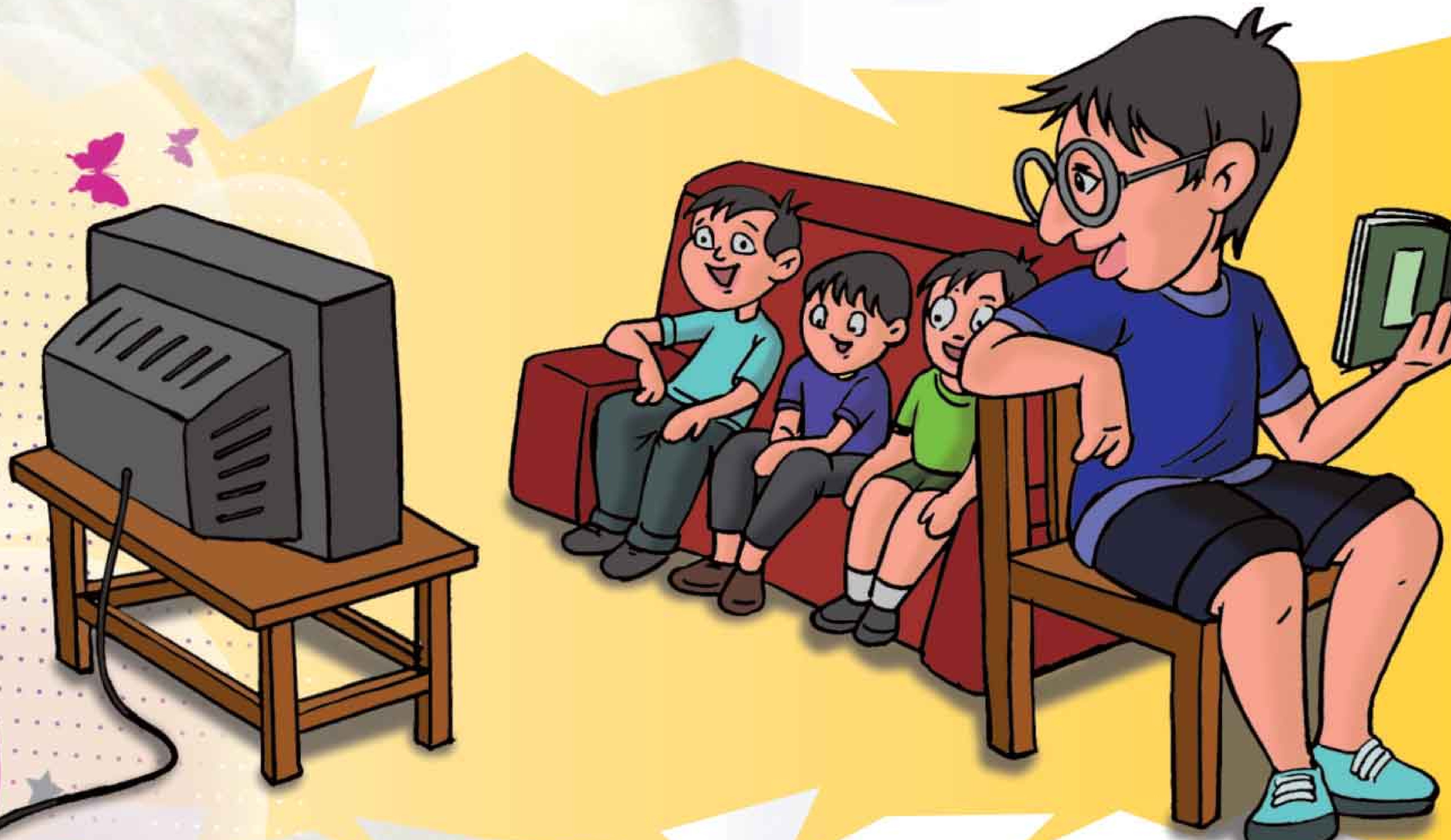

किसीको थोड़ा भी इनसिन्सियर नहीं रहना चाहिए। उससे अपनी सिन्सियरिटी टूटती है। अर्थात् जो मनुष्य दूसरे के प्रति सिन्सियर नहीं रहता, वह अपने खुद के प्रति भी सिन्सियर नहीं रह सकता। जहाँ सिन्सियरिटी नहीं है, वहाँ कुछ भी नहीं है। उदाहरण के तौर पर अपने भाई को कुछ चाहिए तो सब दे देते हैं, लेकिन जब किसी और को कुछ चाहिए तो कुछ देते हैं और कुछ छुपा देते हैं। इसे दूसरे के लिए इनसिन्सियर रहा कहा जाएगा। सिन्सियर व्यक्ति तो वह कहलाता है जो हर किसीका अपना हो या पराया, सबका एक सरीखा ध्यान रखे।

सिन्सियरिटी तो भगवान के पास जाने का मुख्य रास्ता है । ठेठ मोक्ष तक ले जाता है।जितनी आपकी " सिन्सियरिटी" होगी, उतनी दादा की कृपा मिलेगी।

यह तो नई ही बात !

यदि एक भी व्यक्ति के प्रति तुम इनसिन्सियर रहे, तो वह तुम्हें मोक्ष जाने से रोकेगा।

कृपा मतलब "हर समय सिन्सियर" इसके लिए "संपूर्ण सिन्सियरिटी" ही चाहिए।

सिन्सियर रहने से संसार में किसी भी तरह का भय नहीं रहता और यही गुण मोक्ष में ले जाएगा!

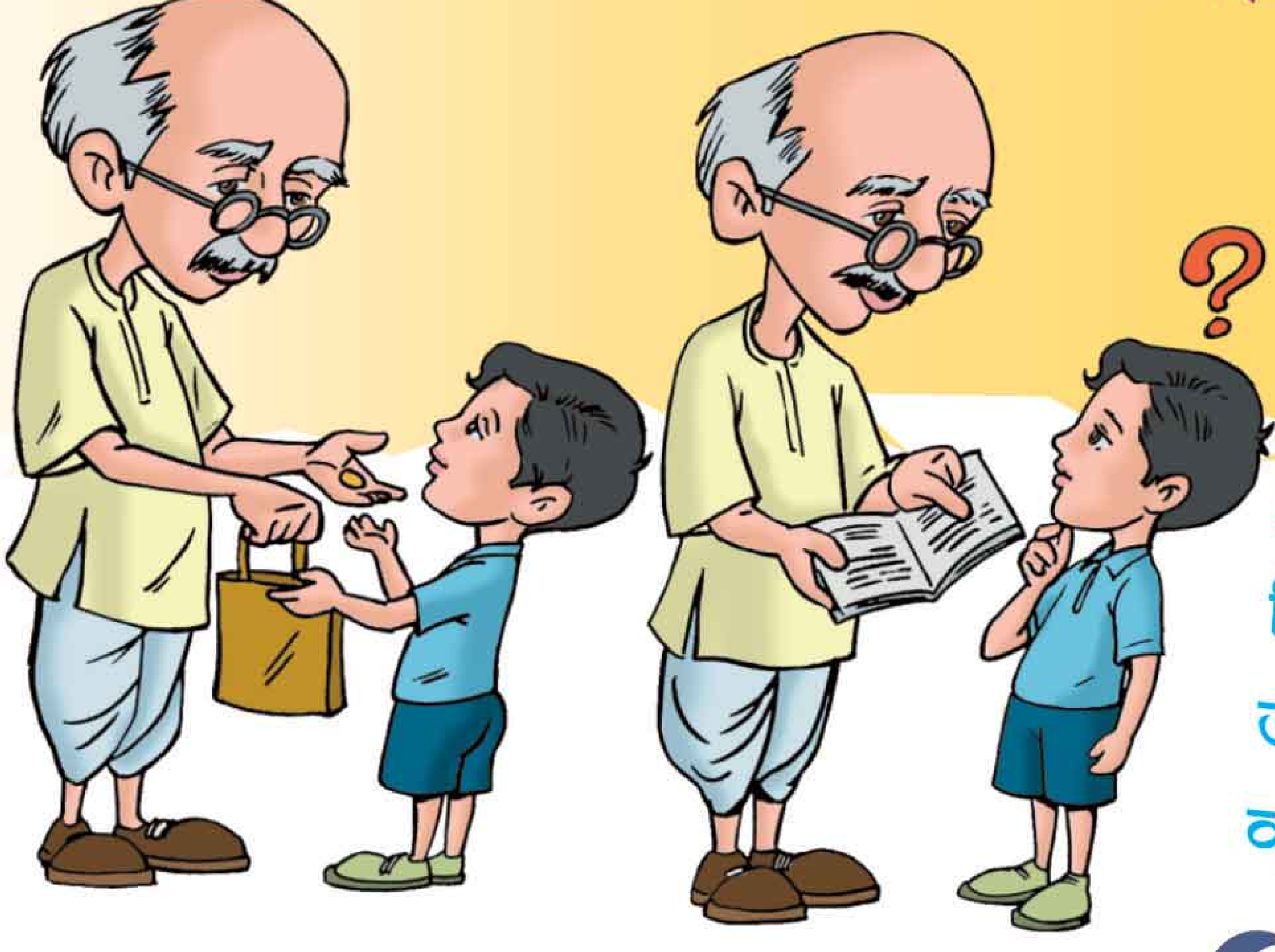

जितनी चीज़ों के प्रति आप "सिन्सियर" रहोगे, उतनी वस्तुओं को आपने जीत लिया। उदाहरण के तौर पर जैसे आपको दिया हुआ काम आप सिन्सियरली पूरा कर लेते हो, तो ज़रूरत पड़ने पर लोग आपका काम कर देंगे।

जितने सिन्सियर रहेंगे, उतनी शांति रहेगी।

जहाँ हार्टीली होता है, वहाँ सिन्सियरिटी होती है। बुद्धि होती है, वहाँ गड़बड़ होती है। उदाहरण के तौर पर कोई काम दिया हो, तो दिल से करनेवाला सिन्सियरली करता रहता है और बुद्धि से करनेवाला सोचता है कि यह काम छोटा है या बड़ा, मैं सबकी नज़र में आऊँगा या नहीं वगैरह।

सिन्सियरिटी से सफलता

शहर से पाँच मील दूर एक छोटा सा गाँव था। उस गाँव में दस वर्ष का चंदू अपने गरीब परिवार के साथ रहता था। रोज़ शाम को चंदू और उसके दोस्त गाँव के पास की टेकरी पर खेलने जाते थे।

एक शाम को उस टेकरी के पास एक गाड़ी रुकी। गाड़ी में से चार-पाँच लोग बाहर निकलें। वे उस जगह का निरिक्षण करने लगे। फिर आपस में कुछ बातें की। यह देखकर चंदू और उसके दोस्तों को कौतुहल हुआ। उतने में एक व्यक्ति ने चंदू से आकर पूछा। "यहाँ का मुखिया कौन है? हमें उनसे मिलना है।"

चंदू उन लोगों को मुखिया के पास ले गया। मुखिया ने सबका आदरपूर्वक सत्कार किया। फिर उनमें से एक व्यक्ति ने मुखिया को गाँव में आने का कारण बताया, "हम शहर से आए हैं, हमारे सेठजी को सपने में देवी माँ का आदेश मिला है कि यहाँ माताजी का मंदिर बनाओ, "यह सुनकर मुखिया बहुत खुश हो गए, "यह तो बहुत अच्छी बात है, भगवान हमारे गाँव में पधारे, इससे ज्यादा और कौन-सा पुण्य हो सकता है?"

"बात तो सही है लेकिन एक मुश्किल है।" उस व्यक्ति ने आगे कहा, "स्वप्न में बताई हुई जगह हमने देखी, लेकिन वहाँ तो बहुत बड़ी टेकरी है। फिर यहाँ तो सड़क भी नहीं है और किसी साधन की व्यवस्था हो सके, ऐसा भी नहीं है। इसलिए बहुत सोचने के बाद हमने निर्णय लिया है कि यहाँ मंदिर बनना नामुमकिन है।" मुखिया निराश हो गए। उनकी निराशा देखकर उनमें से एक साथी ने कहा, "ऐसा करते हैं, हम छः महीने बाद विदेश के कुछ लोगों को साथ में लेकर वापस आएँगे, जिससे और अच्छी तरह से इस बात पर विचार कर सकें।" ऐसा कहकर उन्होंने विदाई ली। मुखिया भीगी आँखों से उन्हें देख रहे थे।

पास में खड़ा हुआ चंदू, तुरंत टेकरी की तरफ दौड़ा, थोड़ी देर वहाँ खड़ा रहा, फिर जैसे मन ही मन उसने कुछ निश्चय किया हो, ऐसे मन में मुस्कुराते हुए वापस लौटा। रात को सात बजे खाना खाकर सो गया। सुबह चार बजे उठकर घर से बाल्टी लेकर टेकरी पर गया। बाल्टी में वह टेकरी से कंकड़, पत्थर और मिट्टी भरकर थोड़ी दूर डाल आता, वापस आकर फिर बाल्टी भरकर डाल आता। इस तरह जब-जब समय मिलता, तब-तब वह ऐसा करता रहता। ऐसे करते-करते एक सप्ताह बीत गया।

उसके दोस्त पप्पू ने चंदू को ऐसा करते हुए देखा। उसे बहुत आश्चर्य हुआ। "यह क्या कर रहा है तू?" पप्पू ने आश्चर्य से पूछा। शहर से आए हुए लोग और देवी माँ के संदेश के बारे में चंदू ने पप्पू को बताया, "इसलिए मैं यह टेकरी खाली कर रहा हूँ। आ, तू भी कर।" पप्पू भी चंदू के साथ इस काम में जुड़ गया।

एक सप्ताह बीत गया। चंदू और पप्पू के पापा को यह बात मालूम हुई। दोनों को अपने बेटों पर गर्व हुआ और वे भी इस काम में जुड़ गए। वे ओज़ारों से पत्थर तोड़ते और चंदू-पप्पू वे पत्थरों को दूर डाल आते। धीरे-धीरे गाँव के लोगों को इस बात का पता चला और सभी इस काम में जुड़ गए। टेकरी पर से खाली की हुई मिट्टी का ढेर करने की जगह, सब उसे बिछाने लगे। जिससे एक सड़क तैयार होने लगी। छः महिने पूरे होने से पहले तो टेकरी सपाट हो गई और लंबी अच्छी सड़क दूर के एक गाँव की सड़क से मिल गई।

फिर एक दिन बड़ी गाड़ी आई और सड़क के पास खड़ी रही। चंदू ने गाड़ी में बैठे हुए कुछ लोगों को पहचान लिया ओर कहा, "चलो मैं आपको हमारे मुखिया के पास ले चलता हूँ "टीम के लोगों को सड़क देखकर आश्चर्य हुआ। वे चंदू के पीछे-पीछे गाड़ी ले गए।

मुखिया ने सभी मेहमानों का स्वागत किया और कहा, "अब तो टेकरी भी नहीं है, सड़क भी बन गई है। अब तो मंदिर बनेगा न?" गाँव में हुए इतने बड़े परिवर्तन से टीम को बहुत आश्चर्य हुआ। एक भाई बोले "यह तो चमत्कार है, हमारे सेठ बहुत खुश होंगे, मंदिर तो ज़रूर बनेगा, लेकिन यह हुआ कैसे?"

मुखिया ने चंदू को आगे बुलाया और उसकी चमकती आँखों में देखकर उसके सिर पर हाथ घुमाते हुए कहा, "यह काम हमारे इस छोटे जादूगर का है। उसके उत्साह और निष्ठा से यह सब संभव हुआ है। रोज़ वह कंकड़-कंकड़ उठाकर पहाड़ गिराने की कोशिश करता था।"

एक महानुभव ने पूछा, "तुम्हें ऐसा विचार कैसे आया, बेटा?"

चंदू ने कहा, “मैंने चींटियों को देखा था, वे कैसे कण-कण इकट्ठा करके पहाड़ बना देती हैं, तो मुझे लगा कि कण-कण करके इस पहाड़ को गिरा भी सकते हैं न!"

"लेकिन तुझे थकान नहीं लगी?" महानुभाव ने पूछा।

"थकान कैसी? मुझे तो खुशी थी। जैसे-जैसे एक-एक कंकड़ कम होता जाता, वैसे-वैसे मैं अपने ध्येय की नज़दीक पहुँचता जाता था न!" चंदू ने कहा।

"लेकिन सुबह चार बजे उठने में तुझे आलस नहीं आया कभी? " महानुभाव ने फिर पूछा।

चंदू ने कहा, "ऐसी पोल मारूँगा तो मंदिर का काम बिगड़ नहीं जाएगा? छः महीनें में हमारा ध्येय पूरा करना था।"

चंदू की सिन्सियरिटी से प्रभावित हुए उन महानुभाव ने फिर पूछा, "और जब इस काम में दूसरे लोग शामिल हुए तब कैसा लगा?"

"तब मैंने भगवान का आभार माना कि आप हमारे ध्येय को पूरा करने में इतनी सहायता कर रहे हो, उसके लिए खूब-खूब आभार!" चंदू ने जवाब दिया।

शहर से आए हुए लोगों ने कबूल किया कि, "हमें सिन्सियरिटी से सफलता मिलती है, ऐसी बातें बहुत सुनी हैं, लेकिन आज प्रत्यक्ष देखा। पूरे गाँव के लोगों ने साथ मिलकर इस मंदिर के प्रोज़ेक्ट को संभव बनाने के लिए जिस सिन्सियरिटी से काम किया है, उसके लिए हम आपके आभारी है। कल ही हमारे सेठ को यहाँ आकर भूमिपूजन करने के लिए विनती करेंगे। वे यह समाचार सुनकर बहुत खुश होंगे।"

दूसरे दिन भूमिपूजन हुआ। गाँव के लोगों को काम मिला। आमदनी बढ़ी और परिवार में सुख-शांति बढ़ी। थोड़े ही समय में मंदिर में भगवान पधारे, सभी आनंद-विभोर हुए।

जागे तभी सवेरा

बेटा इन्द्रवदन, मुझे वचन दे कि तू निष्ठापूर्वक और दिल से अपने राज्य की देखभाल करेगा।
कुछ ही दिनों में राजा का अवसान हो गया। राजकुमार इन्द्रवदन का राज्याभिषेक हुआ और पिताजी को दिए हुए वचन के अनुसार राजकुमार ने राज्य की पूरी ज़िम्मेदारी अपने हाथ में ले ली।
लेकिन जैसे-जैसे समय निकलता गया, राजकुमार मौजशौक में डूब गए। कभी शिकार तो कभी संगीत। पिताजी को दिया हुआ वचन पालने में वह बिल्कुल भी सिन्सियर नहीं रहे।
अचानक एक दिन,
राजाजी, सोनपुर के राजा ने अपने राज्य पर आक्रमण कर दिया है और सबकुछ उलट-पुलट कर दिया है। उनका सामना करने के लिए हमारे पास कोई तैयारी ही नहीं है। अब क्या करेंगे?
अपनी जान बचाने के लिए राजा और उसके मंत्री ने वेश बदलकर राज्य में से पलायन किया। राजा ने ग्वाले का वेश बनाया।
राजा जंगलों में यहाँ-वहाँ भटकते रहे। कई दिनों तक भटकने के बाद एक दिन वह एक बढ़ई की झोपड़ी में आए।

बहन, बहुत भूखा हूँ। कुछ खाने को मिलेगा?
आओ बैठो।
खाना मिलेगा लेकिन तुम्हें मेरा एक काम करना पड़ेगा। मुझे बाहर गायों को दुहने जाना है, इस चूल्हे में रोटियाँ सेकने रखीं हैं। उनका ध्यान रखना और खास ध्यान रखना कि रोटियाँ जल न जाएँ।
हाँ, ज़रूर।
वहाँ चूल्हे के पास बैठे-बैठे राजा को झोंका आ गया। रोटियाँ सब जल गईं, झोंपड़ी में धुंआ फैल गया।
थोड़ी देर बाद
यह क्या? अरे ओ आलसी के बच्चे, उठ! यह क्या किया तूने? इतना छोटा-सा काम भी तूने ठीक से नहीं किया?

ये तो जैसा राजा वैसी उसकी प्रजा। निष्ठाहीन राजा की वजह से अभी राज्य की कैसी दयनीय स्थिति हो गई है! और आज इस कामचोर की वजह से हमें भूखा रहना पड़ेगा।
यह सुनकर राजा को आघात लगा।
पिताजी को दिया हुआ वचन मैंने निष्ठा से नहीं निभाया, उसका कैसा दुःखद् परिणाम आया! मैं मौज-शौक में अपना ध्येय ही भूल गया। कैसी भयंकर भूल हो गई मुझसे!
इतने में तो बढ़ई अंदर आया। उसने राजा को पहचान लिया।
चुप हो जा, तुझे कुछ होश है या नहीं, तू यह सब किसे बोल रही है? ये तो खुद राजा ही हैं।
हे राजा! मुझे माफ़ कर देना। मैंने कितनी कठोरता से आपके साथ बात की।
नहीं बहन, तूने बिल्कुल सच ही कहा। मैं तेरी डाँट के लायक ही था। मैंने तुझे कहा था कि मैं रोटियों का ध्यान रखूँगा, लेकिन इतना भी ध्यान नहीं रख सका। काम छोटा हो या बड़ा, लेकिन एकबार जो काम करने का निर्णय किया, फिर उसे निष्ठापूर्वक करना चाहिए। इस बार तो मैं निष्फल हो गया, लेकिन अब ऐसा नहीं होगा। राजा का मेरा जो कर्तव्य है, वह मेरी राह देख रहा है।

चलो खेलें ....

१ नीचे दिए गए चित्र में रास्ता ढूँढो।

२ नीचे दिए गए फूलों में से कौन-से दो फूल एक सरीखे हैं, वह ढूँढ निकालो....

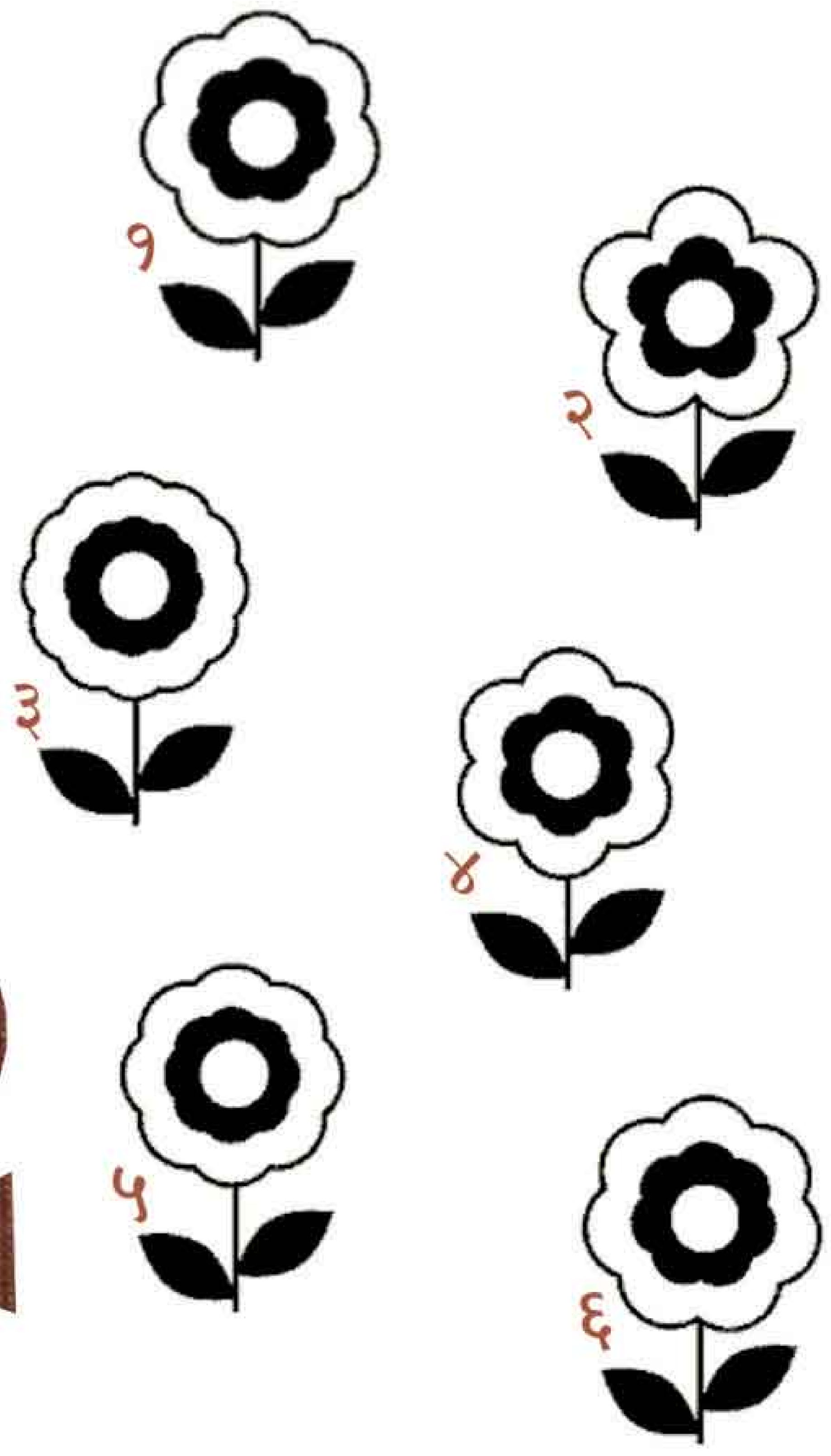

३ नीचे दिखाए गए चित्र की मदद से, पास में दिए गए खानों में सुंदर चित्र बनाओ...

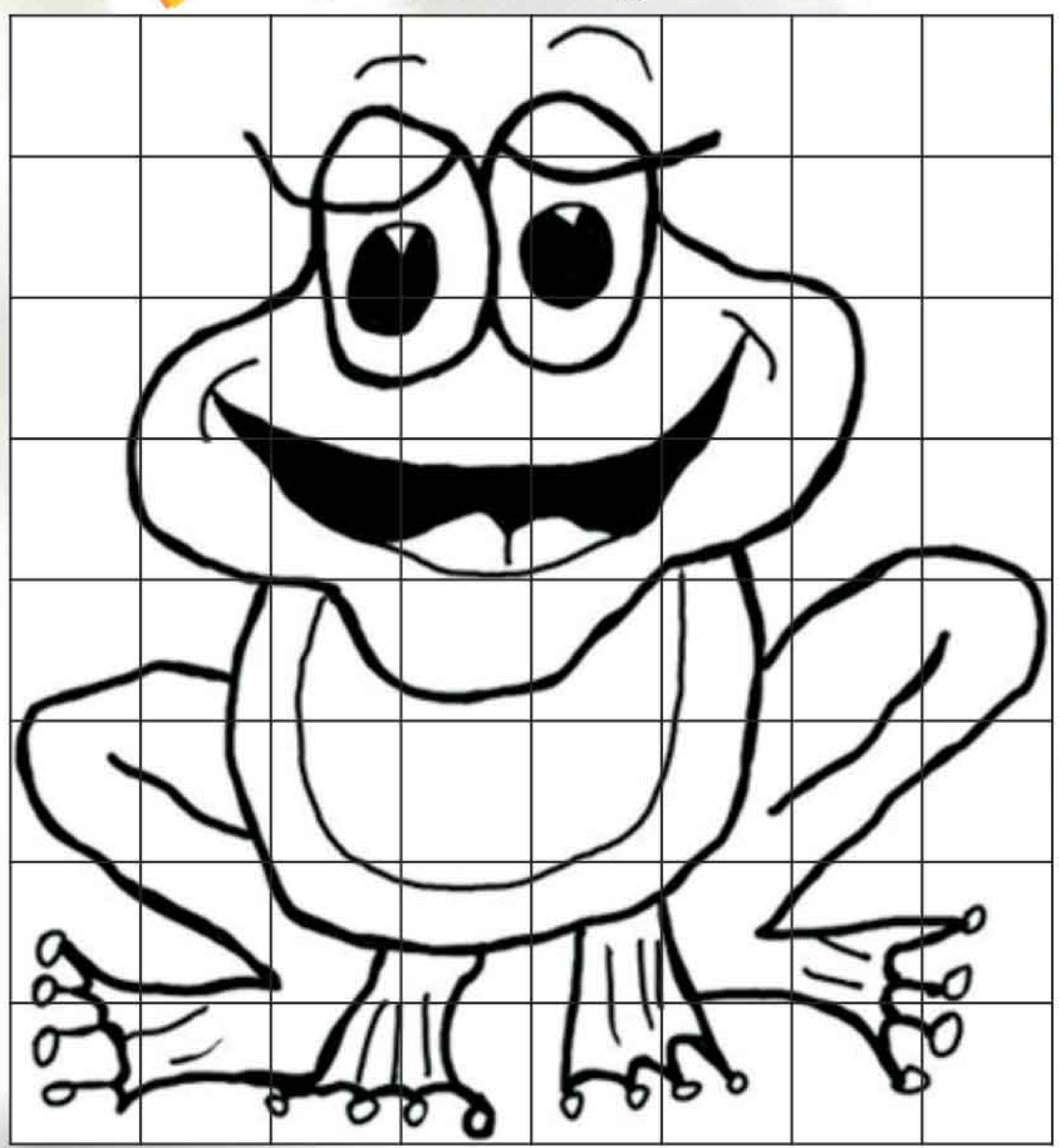

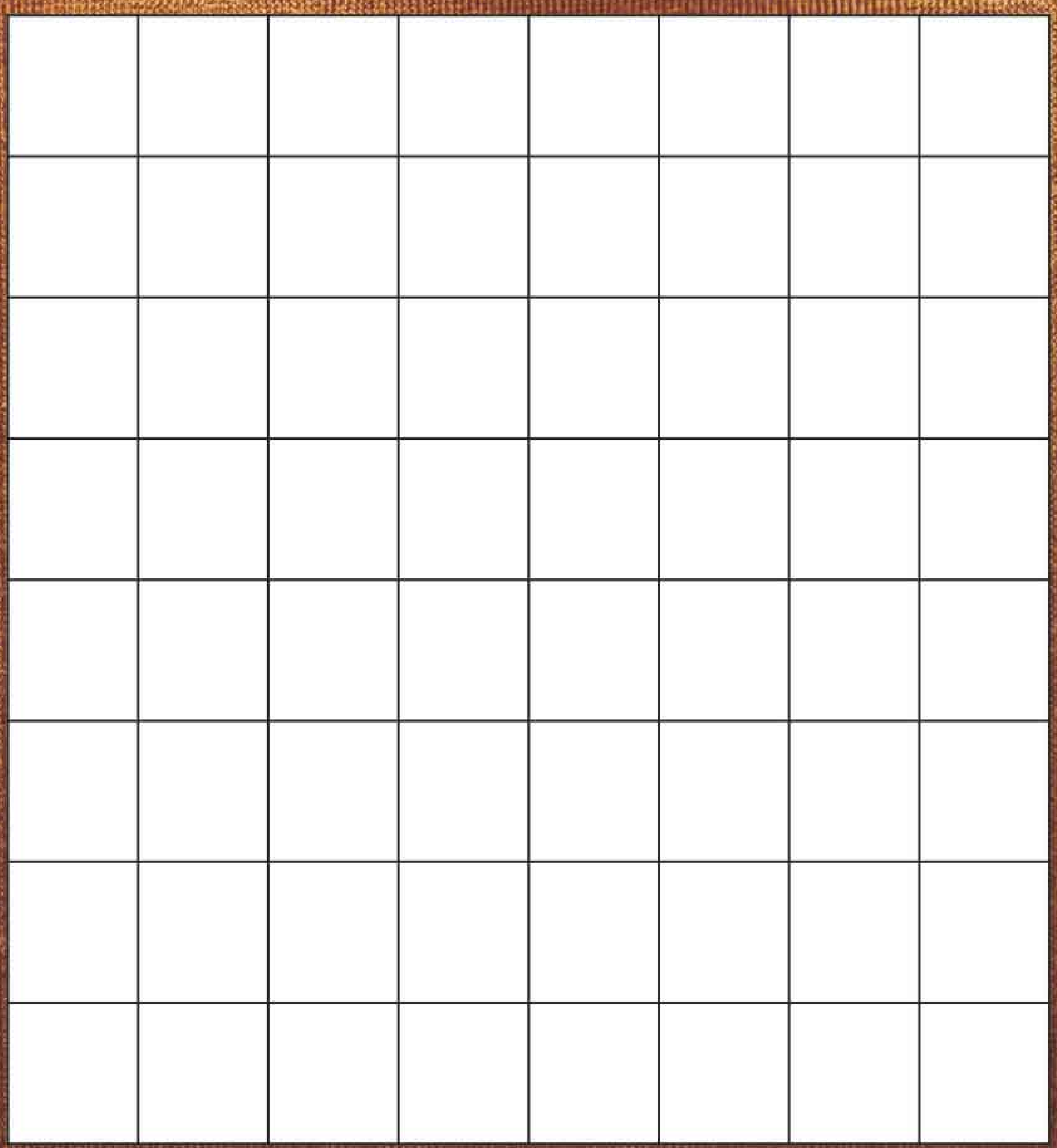

४

नीचे बताए गए चित्र में चार लेवल दिखाए हैं। एक लेवल में तीन एक सरीखी आकृतियाँ छिपी हुई है, उन्हें ढूंढ निकालो....

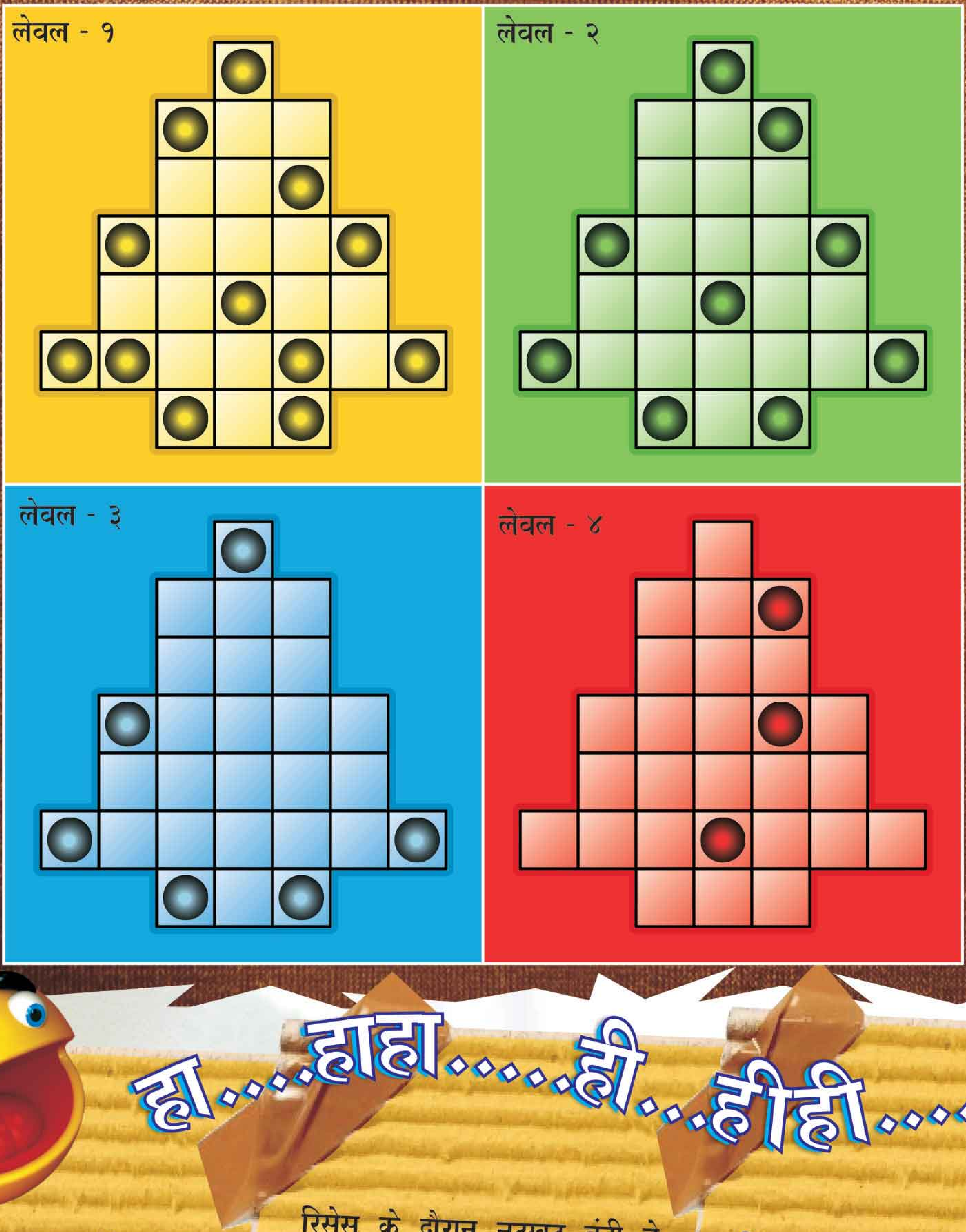

हा....हाहा.....ही...हीही....

रमेश : मनुष्य दिमाग बिना कितने साल जी सकता है?

महेश : मुझे मालूम नहीं, लेकिन आपकी उम्र कितनी है?

रिसेस के दौरान नटखट बंटी ने आवाज़ देकर कहा, किसीके बुट खो गए हैं?

एक विद्यार्थी : हाँ, मेरे खो गए हैं।

बंटी : लेकिन मुझे तो सिर्फ डोरी ही मिली है।

शिक्षक : कहो बच्चों, अगर गर्मी होती ही नहीं, तो क्या होता?

तूफानी टिंकू: तब तो फिर साहब गर्मी की छुट्टियाँ ही नहीं मिलतीं।

ऐतिहासिक गौरव गाथाएँ

तेतलीपुर नाम के राज्य में एक कनकरथ नाम के राजा राज करते थे। उनके यहाँ राजनीति में कुशल ऐसे तेतलीपुत्र नाम के मंत्री थे। राज्य में उनका खूब मान-सम्मान था। राजा से भी उनको बहुत आदर मिलता था। सम्मानपूर्वक जीवन जीने के कारण धर्म की तरफ उनकी रूचि नहीं रहती थी। उनकी पत्नी का नाम पोट्टिला था। तेतलीपुत्र आनंद से पोट्टिला के साथ रहते थे।

समय के साथ-साथ तेतलीपुत्र को पोट्टिला के प्रति अभाव होने लगा। उन्होंने पोट्टिला से बात करना बंद कर दिया। इससे पोट्टिला उदास और चिंतित रहने लगी। एक बार उनके घर पर सुव्रता साध्वी अपनी दो शिष्याओं के साथ पधारीं। पोट्टिला ने उन्हें अपने पति का जो उसके प्रति अभाव था, उसके बारे में बताया और उसे दूर करने के लिए यदि कोई मंत्र-जाप आदि हों तो देने के लिए अनुरोध किया।

सुव्रता साध्वी ने उससे कहा, "ऐसा कुछ हमारे पास नहीं है। हम तो धर्म उपदेश देते हैं।" पोट्टिला को धर्म उपदेश सुनने की इच्छा हुई। उसे सुनकर पोट्टिला को वैराग्य उत्पन्न हुआ। उसे दीक्षा लेने का विचार आया।

जब पोट्टिला दीक्षा लेने की आज्ञा के लिए तेतलीपुत्र के पास गई, तब तेतलीपुत्र ने कहा कि, "तू चारित्र पालन करके आयुष्य पूरा होने पर देवगति में जाए और मुझे धर्म उपदेश देने के लिए आने का वचन दे, तो दीक्षा लेने की मंजूरी दूँगा।" पोट्टिला ने यह बात मान ली और दीक्षा अंगीकार की।

तप आदि करके, बहुत सालों तक चारित्र पालन करके, आयुष्य पूरा करके पोट्टिला साध्वी देवलोक में पोट्टिलदेव नाम के देव हुए। वचन के अनुसार, तेतलीपुत्र को धर्म उपदेश देने के लिए, वे बार-बार अलग-अलग ढंग से आते और उसे उपदेश देते। लेकिन तेतलीपुत्र धर्म धारण नहीं कर पाता था। इसीलिए दैवी शक्ति से पोट्टिल देव ने, तेतलीपुत्र के बारे में, राजा

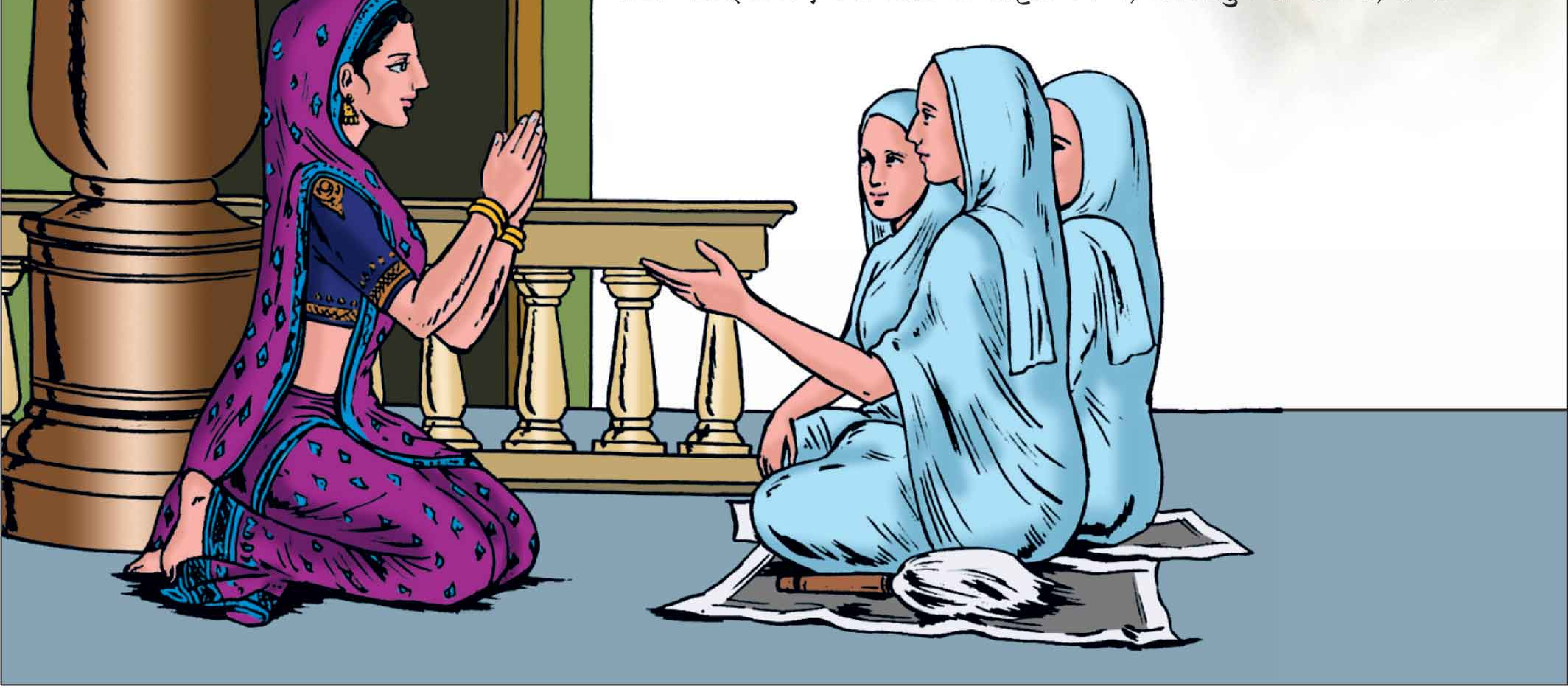

और प्रजा के मनोभावों को बदल दिया। इससे ऐसा हुआ कि राजा और प्रजा से तेतलीपुत्र को जो मान-सम्मान मिलता था, वह बंद हो गया। राजा ने उसकी तरफ देखना भी बंद कर दिया। तेतलीपुत्र सामने से बुलाए, तो भी राजा बात नहीं करते थे।

तेतलीपुत्र को बहुत दुःख हुआ। घर गया तो वहाँ भी पुत्र ने, माता-पिता ने उससे बात नहीं की। इससे वह अपने विश्रामगृह में आकर सोचने लगा कि, "पहले मेरा जो सम्मान था, वह आज अचानक खत्म हो गया। तो अब ऐसा अपमानित जीवन जीने से तो मर जाना क्या बुरा है?" ऐसा सोचकर उसने आत्महत्या करने के काफ़ी प्रयास किए, लेकिन हर बार पोट्टिल देव उसे अपनी दिव्य शक्ति से बचा लेते।

अब तेतलीपुत्र को विचार आया, कि, "जो संत-महात्मा पाप-पुण्य, स्वर्ग-नर्क की बातें करते हैं, वही सत्य है, बस। मेरी मान्यता ही गलत है।" ऐसा सोच रहा था, तब पोट्टिल देव पोट्टिला का रूप धारण करके तेतलीपुत्र के सामने आए और कहा, "हे, तेतलीपुत्र ! जब कोई मनुष्य ऐसी स्थिति में हो, जहाँ चारों तरफ भय ही दिखे, तब ऐसी स्थिति में कहाँ जाना चाहिए? यह बताओ।"

इस प्रश्न के उत्तर में तेतलीपुत्र ने कहा, "ऐसे भयवाले प्रसंग में चारित्र ग्रहण करके आत्म कल्याण के मार्ग में जाना चाहिए, यही सुरक्षित स्थान है।"

तब पोट्टिला ने कहा, "आप भी भयभीत हुए हो, तो आप भी चारित्र ग्रहण करेके आत्म कल्याण का मार्ग अपनाओ।" ऐसा कहकर पोट्टिल देव अदृश्य हो गए।

यह सुनकर तेतलीपुत्र सोच में पड़ गए, बहुत सोचने पर वैराग्य उत्पन्न हो गया। तुरंत ही दीक्षा लेकर वे वन में चले गए और आत्म कल्याण करके मुक्ति मार्ग में आगे बढ़े।

अपने आपका परीक्षण कर के देखो!

इस मिड-टर्म की परीक्षा में गणित में १००/१०० मार्क्स लाने का ध्येय, तुमने निश्चित किया है। इस ध्येय तक पहुँचने के लिए, तुम्हें कुछ प्रतिकूल और कुछ अनुकूल कारक मिलेंगे। नीचे दिखाए गए साँप-सीढ़ी के खेल में, साँप बाधा है और सीढ़ी अनुकूल कारण है। टेबल (सूची) में दिए हुए संयोगों के इक्वेशन (समीकरण) हल करें, साँप नं. **(X)** और सीढ़ी का नं. **(X)** मालूम करें, इक्वेशन : सीढ़ी चढ़ने का पोइन्ट (जगह) **X** है। और सीढ़ी के अंत का पोइन्ट (की जगह) **Y** है। साँप का मुँह **X** है। साँप की पूँछ **Y** है।

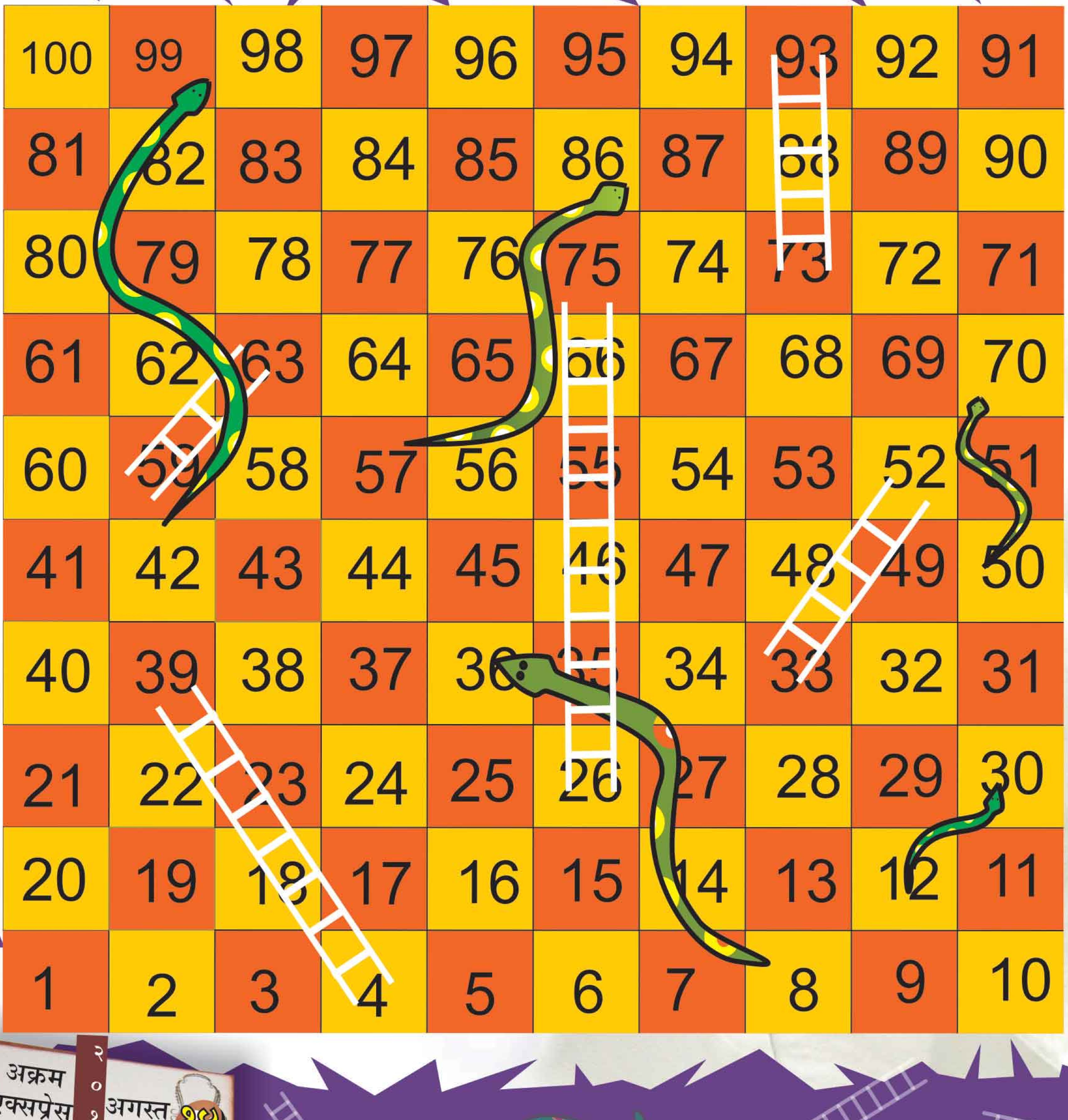

दा.त.

कठीन प्रश्नों को सोल्व करना **x = y** + २८

वह साँप है (क्योंकि वह ध्येय तक पहुँचने के लिए बाधक है।) साँप नंबर (साँप का मुँह) की आवश्यकता है - ३०,३६,७०,८६,९९।

हमारे इक्वेशन में साँप का मुँह **(x)**, उसकी पूँछ **(y)** से २८ नंबर ज्यादा है। वह सिर्फ साँप नं. ३६ में ही संभव है - जिसका **y** (साँप की पूँछ) **= 8** है।

३६ (साँप का मुँह) **= 8** (साँप की पूँछ) + २८

अनुकूलता, प्रतिकूलता	इक्वेशन	साँप न.	सीढ़ी न.
१) मुश्किल सवाल हल करना मुल्तवी रखना	x=y+ २८		
२) पक्का निश्चय रखना	x=y - ४९		
३) टाइम टेबल बनाना चाहिए	x=y - १९		
४) ध्येय को पकड़े रखना	x=y - २०		
५) रोज़ टी.वी पर मन पसंद कार्यक्रम देखना	x=y+ १८		
६) फोन पर गप्पें लगाना	x=y+ २०		
७) इन्टरनैट पर बिना काम सर्फिंग करना	x=y+ ५७		
८) पार्टी में जाना	x=y+ २९		
९) रोज़ दादा से ध्येय में सिन्सियर रहने की शक्ति माँगना	x=y - ४		
१०) टाइम टेबल के अनुसार चलना	x=y - ३५		

पहेलियों के जवाब

४)

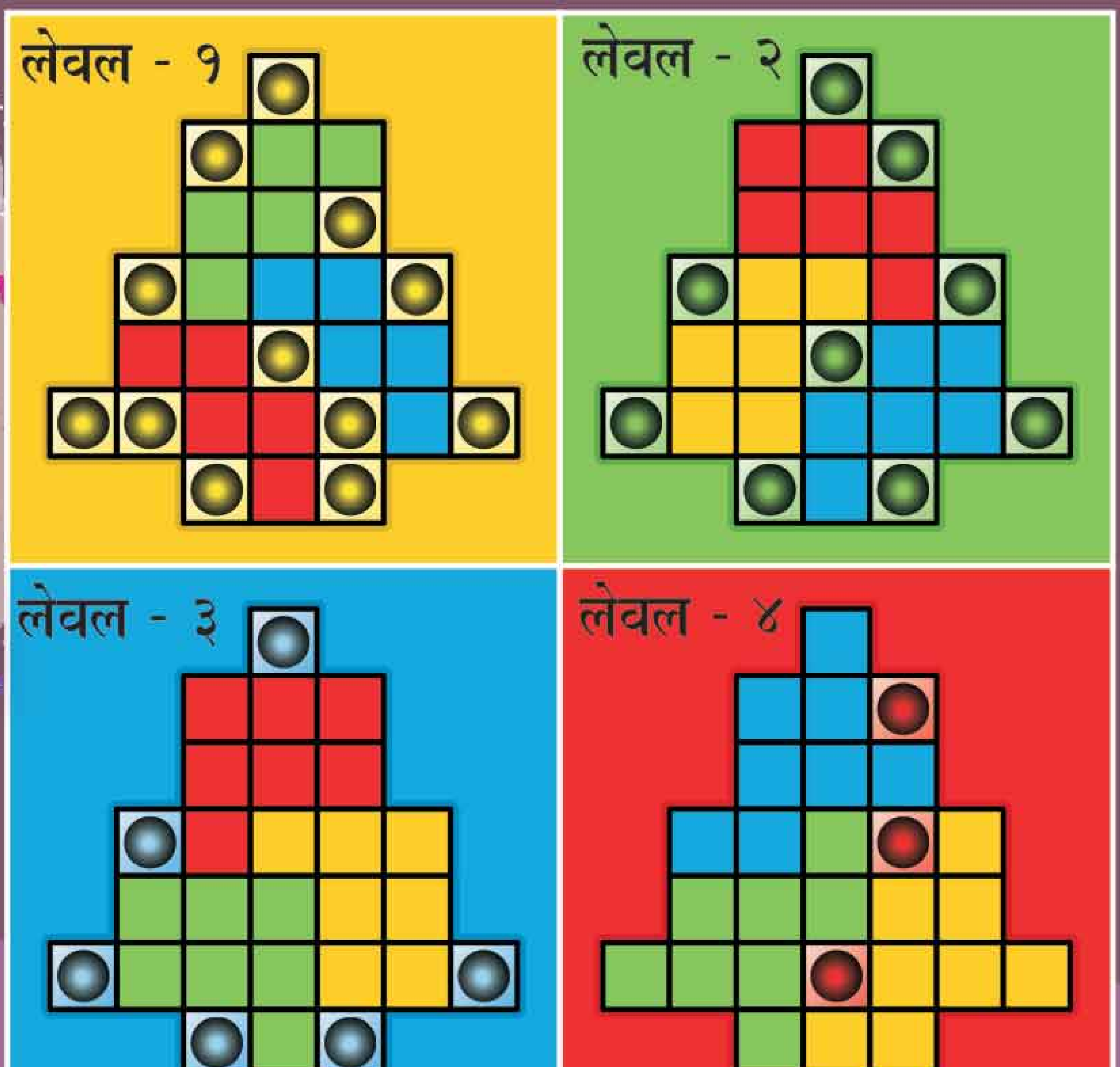

२) - ૧ અને ૬

अपने आपका परीक्षण कर के देखो!

उत्तर:

१) साँप न. ३६, २) सीढ़ी न.२६
३) सीढ़ी न. ३३, ४) सीढ़ी न.६३,
५) साँप न.३०, ६) साँप न.६०
७) साँप न.८८,८ ८) साँप न.८६,८
९) सीढ़ी न.५८,१० १०) सीढ़ी न.४

मीठी यादें

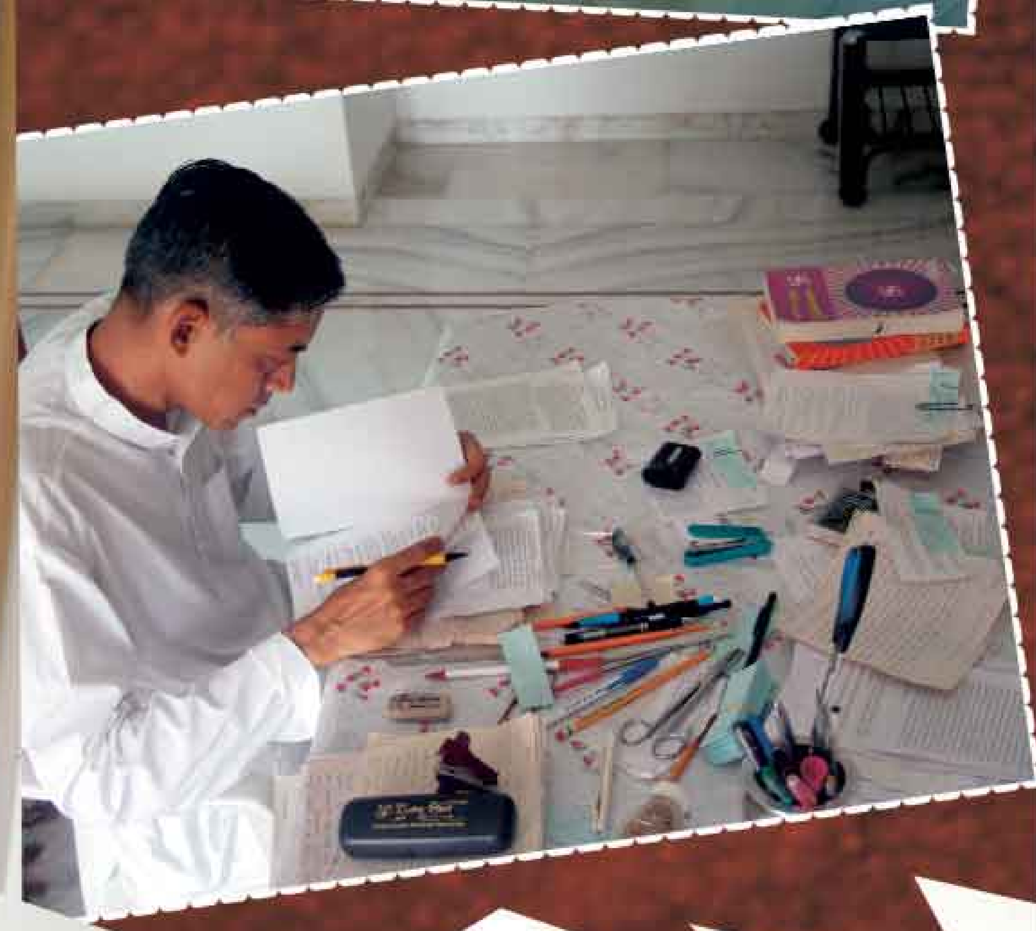

परम पूज्य दादाश्री पूज्य दीपकभाई से हमेशा कहते थे, "तुझ में सिन्सियरिटी का गुण बहुत ऊँचा है। यही तुझे मोक्ष में ले जाएगा।" तो आओ देखें, पूज्य दीपकभाई की सिन्सियरिटी की झलक!

पूज्य दीपकभाई दादाश्री से मिले, तब उनकी उम्र सिर्फ १७ साल की थी। सत्संग के प्रति उनकी रुचि देखकर, पूज्य नीरु माँ ने उन्हें दादाश्री की वाणी लिखने का काम सौंपा। जब दादाश्री का सत्संग चलता था, तब पूज्य दीपकभाई एक कौने में बैठकर चुपचाप दादाश्री की वाणी लिखते रहते थे।

धीरे-धीरे दादाश्री की वाणी ऑडियो केसेट्स में रिकॉर्ड होने लगी। तब केसेट्स में से सुनकर लिखने का काम पूज्य दीपकभाई करने लगे। जैसे-जैसे नए भाई-बहनें सेवा में जुड़ते गए, पूज्य दीपकभाई उन्हें दादाश्री की वाणी लिखने की सेवा में सहभागी बनाते थे। धीरे-धीरे दूसरी सेवाओं में ज़रूरत पड़ने से वे भाई-बहनें उसमें से निकलकर दूसरी सेवा में लग जाते थे। पूज्य दीपकभाई तब भी उतनी ही प्रसन्नता और विशालता से सबको दूसरे प्रोजेक्ट में जुड़ने देते और उनका अधूरा वाणी का काम वह खुद पूरा कर देते। दादावाणी, विविध आप्तवाणियाँ और अनेक पुस्तकों को प्रकाशित करने में पूज्य नीरु माँ के साथ अड़िग रहकर काम किया है। इस तरह पिछले ४० सालों से वे सिन्सियरली अविरत वाणी का काम कर रहे हैं।

क्या हम कोई एक काम भी लगातार चार दिन कर सकते हैं?

एक दूसरा प्रसंग, लगभग १९७६-७७ की बात है। एक बार पूज्य नीरु माँ के कहने पर पूज्य दीपकभाई ने दादाश्री को एक पत्र लिखा कि उन्हें ज्ञान कैसा रहता है। दादाश्री पत्र पढ़कर बहुत ही खुश हुए और कहा, "यह तो बहुत ऊँची जागृति कहलाती है। एक काम करना, किसी के साथ सत्संग मत करने लग जाना। अगर कोई (तुझे) कुछ पूछे तो 'दादा से पूछो' ऐसा कह देना।"

फिर सीधा १९८७ में जब दादाश्री ने उन्हें अमेरिका बुलाया, तब सत्संग करने की आज्ञा दी। लेकिन इन २० सालों के दौरान पूज्य दीपकभाई ने दादाश्री की आज्ञा का अक्षरशः पालन किया। कोई उन्हें साधारण ढंग से भी कुछ पूछे तो भी वे दादाश्री से पूछने के लिए कह देते।

वे इतने गुप्त रूप से रहते थे कि पूज्य नीरु माँ बाहर के रूम में महात्माओं के साथ सत्संग करतीं और वे अंदर रूम में चुपचाप वाणी का काम करते और किसीको मालूम भी नहीं पड़ता कि वे अंदर हैं।

ऐसी है पूज्य दीपकभाई (पूज्य श्री) की सिन्सियरिटी।

पूज्य श्री के साथ बच्चे

प्रश्नकर्ता : मुझे मेरे मम्मी-पापा समझते नहीं हैं। वे मुझे समझें इसके लिए मैं क्या करूँ?

पूज्य श्री : तुझे समझते नहीं हैं? तुझे कैसे मालूम हुआ कि वे तुझे समझते नहीं हैं?

प्रश्नकर्ता : कभी-कभी मैं सही होती हूँ, फिर भी वे मानते ही नहीं है।

पूज्य श्री : किस आधार पर मानती है कि तू सही है?

प्रश्नकर्ता : मतलब, कितनी बार ऐसा होता है कि उन्हें लगता हैं कि मैं मस्ती कर रही हूँ, लेकिन वास्तव में यह सच नहीं होता।

पूज्य श्री : परंतु तू छोटी थी, तब से अभी तक तुझे इतना बड़ा किया तो मम्मी-पापा का तुझ पर कुछ उपकार होगा या नहीं? तुझे जन्म दिया, कभी बीमार हुई तो इलाज करवाया, पढ़ाया, पहनने के लिए कपड़े दिए, तुझे खाना खिलाते हैं, क्या इन सबके लिए तुझे घर में पैसे देने पड़ते हैं?

प्रश्नकर्ता : नहीं

पूज्य श्री : यानी मम्मी कितना ध्यान रखतीं हैं। यदि कहीं मम्मी नहीं समझतीं तो उनके साथ बात करो कि मेरा भाव ऐसा था, मैं ऐसा समझती हूँ, आपका क्या कहना है? आमने-सामने बैठकर समाधान करना चाहिए। वैसे तो मम्मी-पापा के कहे अनुसार ही करना चाहिए। जब तुझे खेलने जाना हो, टी.वी. देखना हो, कम्पयूटर पर गेम खेलना हो, तब मम्मी मना करे तो लगता हैं कि देखो, मैं तो सब पढ़ाई पूरी करके बैठी हूँ और मुझे थोड़ा-सा खेलना है, तो भी मम्मी मना कर रही हैं। ऐसा होता है न?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

पूज्य श्री : लेकिन वास्तव में मम्मी तुझ से बड़ी हैं या छोटी?

प्रश्नकर्ता : बड़ी।

पूज्य श्री : तो फिर मम्मी ज्यादा समझती हैं या तू ज्यादा समझती है?

प्रश्नकर्ता : मम्मी।

पूज्य श्री : तो फिर मम्मी की समझ से चलना चाहिए या अपनी समझ से?

प्रश्नकर्ता : मम्मी की समझ से।

पूज्य श्री : और पापा कमाकर लाते हैं। अगर तुझे कमाने के लिए भेजें तो तू जाएगी? तुझे कोई पैसा देगा क्या?

प्रश्नकर्ता : नहीं देगा।

पूज्य श्री : तो फिर पापा आपसे ज्यादा समझदार हैं न? इसलिए तुझे मम्मी-पापा से कहना चाहिए कि आप जैसा कहोगी वैसा मैं करूँगी। तुझे कोई दिक्कत है? अभी से, मम्मी-पापा मुझे समझते नहीं हैं, ऐसा मानेगी तो फिर बाद में तुझे बहुत दुःख होगा और वास्तव में तो मम्मी-पापा तेरे कल्याण के लिए और तेरे हित के लिए ही सब कुछ करते हैं। तू बीमार हो जाए तो तुरंत ही तुझे किसी अच्छे डॉक्टर के पास लेकर जाते हैं, अच्छा से अच्छा इलाज करवाते हैं। चाहे कितने भी पैसे खर्च करने पड़ें तो भी खर्च करते हैं, उन्हें तेरे लिए कितना प्रेम है न? इसिलए तुझे मन में ऐसा नहीं समझते नहीं है। मम्मी-पापा का उपकार मानना चाहिए और उनकी बात को समझने का प्रयत्न करना चाहिए। जितना तू समझेगी, उतना ही तुझे अंदर आनंद होगा और मम्मी-पापा को भी आनंद होगा।

Akram Express
August 2012
Year : 1, Issue : 4
Conti. Issue No.: 4

Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set-1
on 08th of every month

BALVIGNAN
Fun 'n' Gnan with Dada

अमरीका में गुरुपूर्णिमा के अवसर पर पूज्यश्री की सत्संग यात्रा की झलक

अमरीका में पूज्यश्री का स्वागत

गुरुपूर्णिमा के दिन दादा के दर्शन और आरती करते हुए पूज्यश्री....

फिलाडेलफिया में बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम

क्रूज़ में पूज्यश्री....

हेलिकॉप्टर में पूज्यश्री....

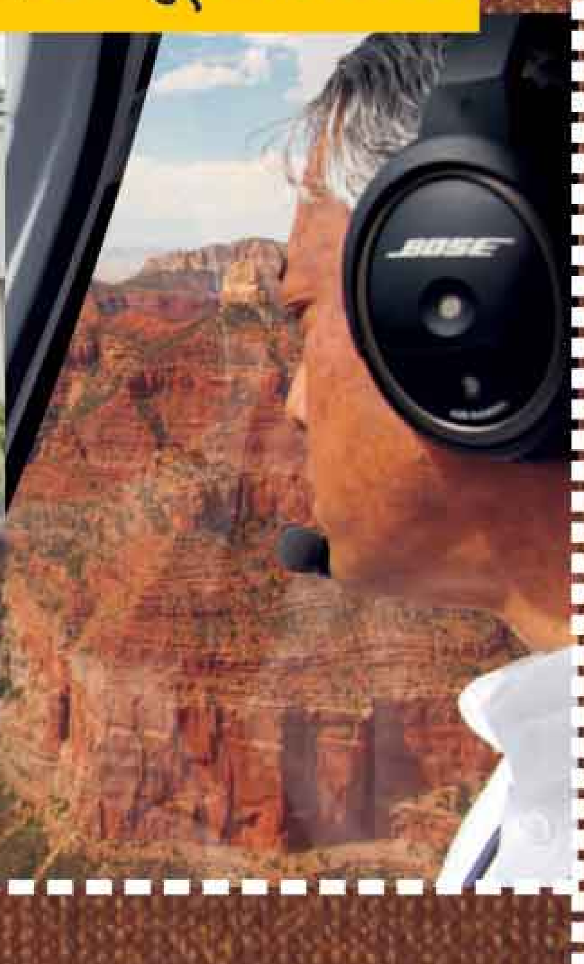

Printer, Publisher and Owner - Mr. Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation, Editor - Mr. Dimple Mehta, Printing Press **Amba offset:-** Parshwanath Chembers, Usmanpura, Ahmedabad-14 and published at Mahavideh Foundation, 5, Mamtapark Society, Bh. Navgujarat College,Usmanpura, Ahmedabad-14.